

हमारी बात

यह बात माननी होगी कि हमारे देश में स्त्रियों के स्वास्थ्य पर कम ध्यान दिया जाता है। आज भी जचकी काल में बड़ी संख्या में मांओं की मृत्यु होती है, पर इसका असली कारण केवल जचकी नहीं। देखने में भले ही मातों का कारण जचकी लगे, पर इसका मुख्य कारण औरतों का खराब स्वास्थ्य है। और यह फल है औरतों के प्रति असमानता का।

प्रकृति ने स्त्री को ज्यादा सहनशील शरीर दिया है। एक सी देखभाल हो तो स्त्री की उम्र पुरुष से लंबी होती है। बीमारियों का मुकाबला स्त्री पुरुष की अपेक्षा ज्यादा मजबूती से करती है। वैज्ञानिक तौर पर साबित हो चुका है कि मादा भ्रूण नर भ्रूण से अधिक शक्तिशाली होता है। प्रकृति से मिली ताकत समाज छीन लेता है। इसी कारण स्त्रियों की मृत्यु दर ज्यादा है।

आइए, यह समझें कि समाज स्त्रियों को कैसे कमजोर बनाता है। यदि लड़की को जन्म से ही परिवार पर बोझ माना जाए तो उसमें जीने की इच्छा कैसे पनपेगी? जन्म से ही बेटे को सत्कार नहीं मिलता। बेटे से बेटे को कम पोषणयुक्त भोजन मिलता है। ब्याह की उम्र तक वह अनगिनत सामाजिक बेड़ियों में जकड़ी रहती है। 10-12 साल की उम्र में लड़की के शरीर में बदलाव आने लगता है। तब उसकी पोषक आहार की जरूरत और बढ़ जाती है। पर इस ओर माएं ध्यान नहीं देतीं। फलस्वरूप लड़की की तंदुरुस्ती की बुनियाद कमजोर रह जाती है। ब्याह और बच्चे होने पर कमजोर बुनियाद अपना रंग दिखाती है। परिवार की जिम्मेदारी उसे और भी कमजोर बना देती है। घर में सबके खा लेने के बाद जो बचे वह औरत खाए यह हमारा आदर्श है। औरत बस बलिदान करती चली जाती है।

बहनें चाहें तो सामाजिक रुढ़ियों को बदल सकती हैं। बुनियादी बात है कि लड़की को जन्म से सम्मान मिले। लड़कियों की उपेक्षा न हो, उन्हें लड़कों के बराबर समझा जाए। उन्हें आगे बढ़ने के बराबर अवसर मिलें, उनकी समान देखभाल हो। माएं यह न सोचें कि लड़की पराये घर का पौधा है, उसे क्यों सींचें? कमजोर पौधा मजबूत पेड़ नहीं बन सकता। यदि वह प्यार से सींचा जाए और उसे उचित पोषण मिले तब देखिए उसकी मजबूती।

संपादिका